प्रजातियों की संख्या पर पुनर्विचार

जैव प्रजातियों को व्यवस्थित रूप से नाम देने और उनका वर्गीकरण करने के प्रयास पिछली दो सदियों से जारी हैं। इन दो सदियों में हमने करीब 17 लाख प्रजातियों का रिकॉर्ड रखा है। इनमें बैक्टीरिया और वायरस शामिल नहीं हैं, जिनमें प्रजातियों का विभाजन आसान नहीं होता। मगर आज भी हम पक्के तौर पर यह नहीं कह सकते कि धरती पर कुल प्रजातियों की संख्या कितनी है। आम तौर पर वैज्ञानिक मानते आए हैं कि यह संख्या 3 करोड़ है।

मगर अब लग रहा है कि यह आंकड़ा वास्तविकता से काफी ज़्यादा है। दरअसल इस आंकड़े का अनुमान 1982 में स्मिथसोनियन संस्थान के टेरी एर्विन ने लगाया था। उनकी विधि को देखना उपयोगी होगा। टेरी एर्विन ने किया यह था कि गुबरैलों की संख्या की गिनती की थी। गुबरैलों की दुनिया में सबसे ज़्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं। इनकी संख्या पता लगाने के लिए एर्विन ने एक पेड़ पर बसने वाले गुबरैलों की प्रजातियों की संख्या देखी। उन्होंने पाया कि पनामा के एक अकेले किस्म के पेड़ पर गुबरैलों की 1143 प्रजातियां पाई जाती हैं। गुबरैले जंतु जगत के रीढ़हीन समूह (अकशेरुकी) के एक कुल के सदस्य हैं। उसी कुल में कीट और मकड़ियां भी आते हैं। और इस बड़े-से समूह आर्थ्रोपोडा में जितनी प्रजातियां हैं वे दुनिया में पाई जाने वाली कुल प्रजातियों का एक-तिहाई हैं। एर्विन ने अनुमान लगाया कि जब एक किस्म के पेड़ पर 1143 गुबरैला प्रजातियां निवास करती हैं तो सारे पेड़ों पर आर्थ्रोपोडा समूह की कम से कम 3 करोड़ प्रजातियां होनी चाहिए। तो कुल जंतु प्रजातियों की संख्या इससे तीन गुनी यानी 10 करोड़ के आसपास होंगी।

ज़ाहिर है, एर्विन की गणनाओं में कई मान्यताओं और अनुमानों का सहारा लिया गया था। जैसे उन्होंने यह माना कि कुल आर्थ्रोपोड जीवों में से गुबरैले कितने प्रतिशत होंगे। फिर यह माना कि कुल जंतु प्रजातियों में से 33 प्रतिशत आर्थ्रोपोडा होंगे इसके बाद उन्होंने यह भी माना कि हर किस्म के पेड़ पर उतने ही गुबरैले पाए जाएंगे। इसके बाद उन्होंने यह भी अनुमान लगाया कि दुनिया भर में कितने किस्म के पेड़ होंगे।

पिछले वर्ष लगभग इसी तरीके का सहारा लेकर एक बार फिर यह जानने की कोशिश की गई कि दुनिया में कितनी जंतु प्रजातियां होंगी। इस बार पपुआ न्यू गिनी के एक नहीं बल्कि 56 प्रजातियों के पेड़ों पर गुबरैलों की गिनती की गई। इसके आधार पर ऑस्ट्रेलिया के मेलबोर्न विश्वविद्यालय के एण्ड्रयू हैमिल्टन ने अनुमान लगाया है कि आर्थ्रोपोड्स की प्रजातियों की संख्या उतनी नहीं है जितनी एर्विन ने निकाली थी। एण्ड्रयू के दल का अनुमान है कि आर्थ्रोपोड प्रजातियों की संख्या 25 लाख होगी। इसके आधार पर कुल जंतु प्रजातियों की संख्या 75 लाख निकलती है। मगर हैमिल्टन का कहना है कि वास्तविक संख्या 55 लाख के आसपास होगी। इसके पीछे उनका तर्क है कि गर्म इलाकों के आर्थ्रोपोड्स की बजाय रीढ़धारी जंतुओं व वनस्पतियों का बेहतर सूचीकरण हुआ है।

इस आंकड़े का मतलब है कि करीब 40 लाख प्रजातियों का सूचीकरण करना बाकी है। फिर भी 10 करोड़ की अपेक्षा यह काम काफी सरल जान पड़ता है। ***(स्रोत फीचर्स)***